विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

April 2026

सरस्वती शिशु मंदिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा

Contact Info

- 0120-4545608
- ssmnoida.in
- ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर – 12, नोएडा

मासिक ई-पत्रिका, अप्रैल – 2026

ज्ञानोदय (अंक - 66)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता

श्री प्रदीप भारद्वाज

श्री कृष्ण कुमार बंसल

श्री राजीव नाईक

श्री नितीश आर्य

श्री जितेन्द्र कुमार गौतम

श्री सुशील कुमार

मार्गदर्शक

श्री देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक मंडल

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)

श्री दीपक कुमार

श्रीमती तरुणा सक्सेना

ब०अनु सिंह

अनुक्रमणिका

1. संपादकीय
2. प्रधानाचार्य जी की कलम से
3. बुद्ध पूर्णिमा
4. विश्व श्रमिक दिवस
5. गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जयंती
6. महाराणा प्रताप जयंती
7. राष्ट्रीय प्रोद्यौगिकी दिवस
8. वीर सावरकर जयंती
9. पुण्यश्लोका अहिल्याबाई जयंती
10. हनुमान जन्मोत्सव
11. अभिभावक गोष्ठी
12. भगवान परशुराम जयंती
13. विश्व पृथ्वी दिवस
14. विश्व पुस्तक दिवस
15. स्वर्ण प्राशन
16. जन्मोत्सव हवन पूजन कार्यक्रम
17. बताओ तो जानें
18. पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

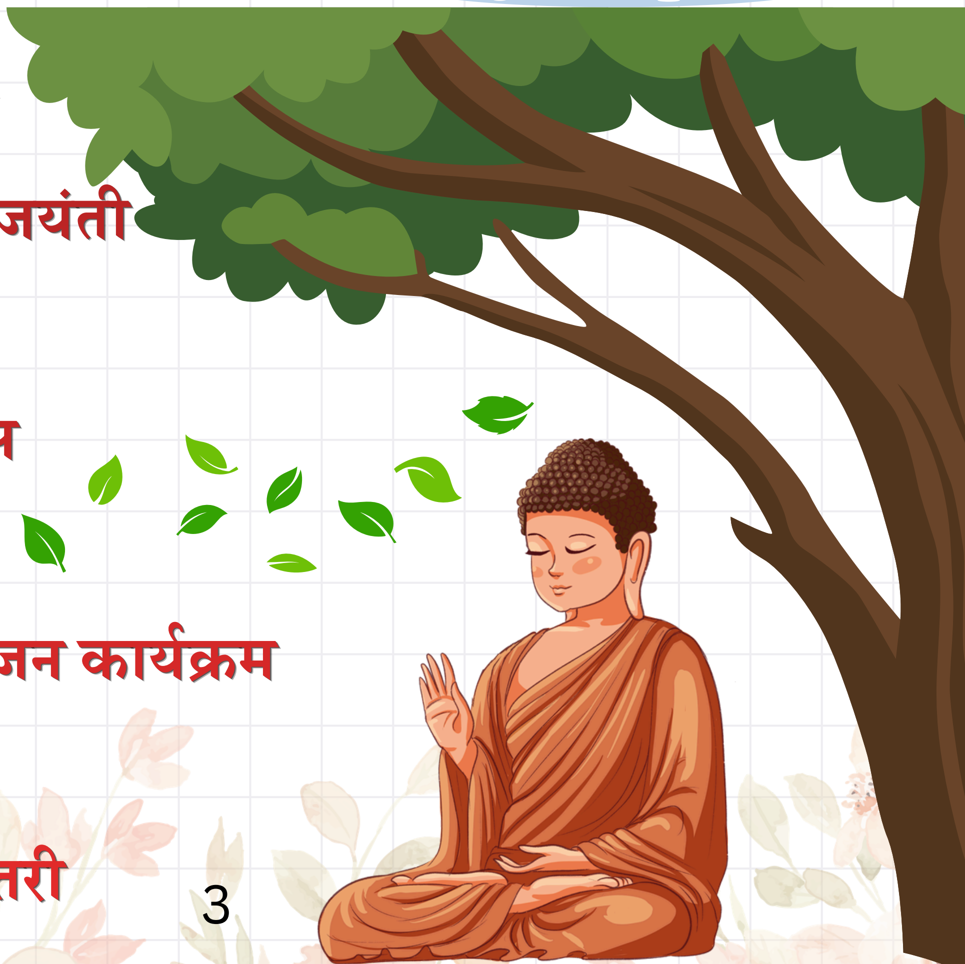

संपादकीय

प्रिय भैया-बहिनों,

पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है। शुद्ध वायु, स्वच्छ जल, हरे-भरे वृक्ष और स्वच्छ वातावरण हमें स्वस्थ जीवन प्रदान करते हैं। आज मानव अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रकृति का अत्यधिक दोहन कर रहा है। वृक्षों की कटाई, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण तथा प्लास्टिक का बढ़ता उपयोग पर्यावरण को निरंतर हानि पहुँचा रहा है। यदि समय रहते हम सचेत नहीं हुए तो आने वाली पीढ़ियों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार का कार्य नहीं, बल्कि हम सभी का कर्तव्य है। हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए तथा उनकी देखभाल भी करनी चाहिए। जल का व्यर्थ उपयोग नहीं करना चाहिए और बिजली की बचत करनी चाहिए। प्लास्टिक की थैलियों के स्थान पर कपड़े या कागज़ के थैलों का उपयोग करना चाहिए। अपने घर, विद्यालय और आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखना भी पर्यावरण संरक्षण का महत्वपूर्ण भाग है।

विद्यालय में भी हम छोटे-छोटे प्रयासों से बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं। जैसे— कक्षा में साफ-सफाई रखना, पौधों को पानी देना, कूड़ा कूड़ेदान में डालना तथा दूसरों को भी स्वच्छता के लिए प्रेरित करना। हमें यह समझना चाहिए कि “एक वृक्ष सौ पुत्रों के समान होता है।” वृक्ष हमें फल, फूल, लकड़ी, छाया और प्राणवायु प्रदान करते हैं। इसलिए वृक्षों की रक्षा करना हमारा नैतिक दायित्व है। प्रिय भैया-बहिनों, यदि हम सभी मिलकर पर्यावरण की रक्षा का संकल्प लें, तो पृथ्वी को हरा-भरा और सुंदर बना सकते हैं। आइए, हम आज से ही पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लें और प्रकृति को सुरक्षित रखने में अपना योगदान दें।

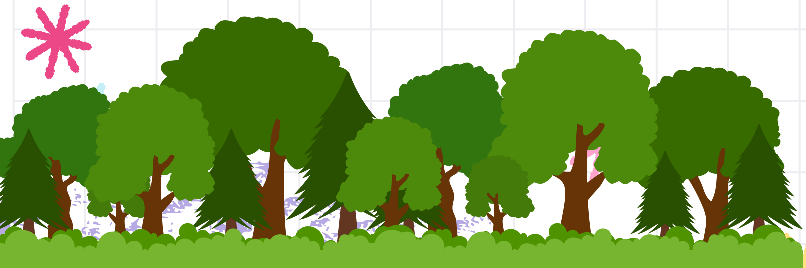

अन्नू सिंह
अंक सम्पादक (ज्ञानोदय)

प्रधानाचार्य जी की कलम से

प्रिय भैया-बहिनों,

ग्रीष्मावकाश का समय केवल विश्राम का ही नहीं, बल्कि स्वयं को नई ऊर्जा, अच्छे संस्कार और उपयोगी ज्ञान से समृद्ध करने का भी अवसर होता है। आप सभी इस अवकाश का सदुपयोग करें तथा अपने समय को अनुशासन और रचनात्मक कार्यों में लगाएँ।

प्रातःकाल शीघ्र उठने, योग-व्यायाम करने तथा नियमित दिनचर्या अपनाने का प्रयास करें। प्रतिदिन कुछ समय अध्ययन, पुस्तक पठन एवं लेखन अभ्यास के लिए अवश्य निकालें। घर के कार्यों में माता-पिता का सहयोग करें तथा बड़ों का सम्मान करें। अच्छे संस्कार ही जीवन को श्रेष्ठ बनाते हैं।

गर्मी के मौसम में अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। पर्याप्त पानी पिएँ, पौष्टिक भोजन करें तथा अत्यधिक धूप में बाहर जाने से बचें। पेड़-पौधों को पानी दें और पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दें। मोबाइल और टीवी का सीमित उपयोग करें तथा खेल-कूद और सृजनात्मक गतिविधियों में अधिक समय दें।

इस अवकाश में कोई नई कला सीखने का प्रयास करें, जैसे चित्रकला, संगीत, हस्तकला या संस्कृत श्लोक। प्रतिदिन एक अच्छा कार्य करने का संकल्प लें और अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखें। याद रखें, छोटे-छोटे प्रयास ही भविष्य में बड़ी सफलताओं का आधार बनते हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी इस ग्रीष्मावकाश को आनंदमय, सुरक्षित और ज्ञानवर्धक बनाएँगे तथा नए उत्साह के साथ विद्यालय लौटेंगे।

आप सभी को उज्ज्वल भविष्य एवं स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएँ।

देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

बच्चे को नहीं, पहले स्वयं को सुधारें, शिक्षक अभिभावक

सात ऐसी बातें जो बच्चों को Respectful behaviour सिखाती हैं - मेघा दीदी

1- मैं तुम्हारी बात सुनूंगी। लेकिन इस तरह तुम्हें बात करने नहीं दूंगी। जिस प्रकार तुम बात कर रहे हो, इससे आपके धैर्य की आत्मा टूटती नजर आ रही है।
2- गुस्सा होना ठीक है - लेकिन बदत्तमीज होना बिल्कुल नहीं। आपकी यह बदतमीजी न मेरे लिए ठीक है, न परिवार की सुख-शान्ति के लिए और न ही आपके स्वास्थ्य के लिए। बदत्तमीजी न मेरे लिए
3- बिना चिल्लाए भी तुम अपनी Feelings बता सकते हो।
4- तुम्हारा Disagree होना ठीक है, किन्तु पूरी बात सुनना बहुत जरूरी है।
5- या तो शान्ति से बोलो या पहले दूर जाकर खुद को calm down करो। फिर आकर बात करो। चॉइस तुम्हारी है।
6- जिस तरह की Respect तुम चाहते हो, पहले वैसे ही बोलने का तरीका सीखो ।
7- जोर से या चिल्लाकर बोलने का मतलब बिल्कुल नहीं है कि वो बात, जो तुम कह रहे हो, सही होने का Proof दर्शाती है।

Respectful बच्चे, Respectful parenting से बनते हैं।

01. बच्चे से उम्मीद कभी न हारें:- लम्बी कद काठी वाले नितिन शर्मा जी पूरी तरह हार मान चुके हैं, वे अक्सर लोगों से कहते हैं, मेरा बच्चा कभी नहीं सुधरेगा। वो तो अब और भी बिगड़ा जा रहा है। वे अपने बच्चे को उसी कमी वाले सांचे में फिक्स कर रहे हैं। लेकिन दूसरी तरफ लता वर्मा जी है जो एक गहरा सच जानती हैं। वो समझती हैं कि बच्चे का मस्तिष्क किसी पत्थर की तरह सख्त नहीं बल्कि गीली मिट्टी की तरह कोमल होता है। साइंस इसको **Neuroplasticity** कहता है। यानि, हमारे दिमाग के रास्ते कभी भी बदले जा सकते हैं। लता वर्मा जी रोज रात को सोने से पहले दो मिनट शान्त बैठती हैं और ये **visualize** करती हैं कि उनका बच्चा नई और अच्छी आदतें सीख रहा है। वे इसे खराब बच्चा नहीं बल्कि एक सीखता हुआ बच्चा देखती हैं, जब आप बच्चे से उम्मीद नहीं हारते, तो उसका दिमाग भी नई चीजें सीखने के लिए तैयार रहता है। याद रखिए कोई भी बच्चा जन्म से खराब नहीं होता, उसे बस आपके सही नजरिये और सही दिशा की जरूरत होती है।

02. अपने बच्चे के अनोखें Talent पर फोकस करें:- दूसरे के बच्चों को देखकर डर लगता है, कि मेरा बच्चा पीछे न रह जाये, क्या करें? तुलना हमेशा कमी मैनीफेस्ट करती हैं, हर बच्चा अपना नसीब व हुनर लेकर जन्म लेता है। जब आप दूसरों को देखना छोडकर, अपने बच्चे के टेलेंट पर फोकस करते हैं तो उसके अन्दर के अनोखे स्किल, टेलेंट शनैः शनैः निखरने लगते हैं, स्नेह दें, प्यार दें और धैर्य रखें परिणाम सकारात्मक निकलेगा ही ।

03. जिंदगी की दौड़ में पीछे न रहने दें :- नेहा शर्मा कहती हैं, हम 90 प्रतिशत अंक लाने के लिए बच्चों की रातों की नींद हराम कर देते हैं, पर क्या उन्हें Failure सम्भालना सिखाया। असली success marksheet में नहीं उनके करेक्टर में होती है, उनके व्यवहार में होती है उनके प्रसन्न रहने में होती हैं, उससे कितने लोग प्रसन्न है इसमें होती है। अगर वो गिरकर उठना नहीं जानता तो वो topper होकर भी पीछे रह जायेगा। डिग्री तो उसे मिल जायेगी अंकों के आधार पर किन्तु जिन्दगी की दौड़ में पीछे रह जायेगा ।

04. बच्चा बोले मैं इसे कर सकता हूँ :- मनोरमा दीदी कहती हैं क्या आपको पता है बच्चे wish magnet होते हैं, उनको manifestation सिखाना बहुत आसान है, बस उन्हें कहो, कि वे अपनी आंखें बन्द करें, और उस चीज को देखें जो वो चाहते हैं, जैसे Maths Test में Full Marks या एक परफेक्ट ड्राइंग, फिर उन्हें कहो कि वो ये लाइन बोलें मैं स्मार्ट हूँ और मैं ये कर सकता हूँ। जब बच्चे अपने दिमाग में जीत को feel करते हैं, तो उनका आत्मविश्वास दोगुना हो जाता है। उन्हें सिखाएं कि उनके शब्द उनके लिए जादू की छड़ी हैं।

05. आकर्षण के नियमानुसार :- Physics प्रवक्ता प्रदीप तोमर जी के अनुसार सोते वक्त हमारा subconscious mind सबसे ज्यादा Active होता हैं। Law of Attraction के अनुसार उस वक्त बोली गई बातें हकीकत में परिवर्तित होती प्रतीत होती हैं। रोज रात को अपने बच्चों के सिर पर हाथ फिराते हुए मधुर आवाज में (लोरी की तरह) निम्नांकित पाँच बातें बोलिए
01. आप बहुत समझदार हैं।
02. दूसरों की सेवा करना आपको अच्छा लगता है।
03. आप पढ़ने में शनैः शनैं' होशियार हो रहे हो।
04. आप सेफ हैं, घर के सभी लोग आपको बहुत प्यार करते हैं।
05. अम्बिका मैम आपकी बहुत प्रशंसा करती हैं।

कुछ दिन बाद ही आप देखेंगें कि आपके बालक में अदभुत सकारात्मक परिवर्तन दिखाई पड़ेगा। ध्यान रहे कि आपका बच्चा आपके लैक्चर से नहीं, लाइफ स्टाइल से सीखता है। अगर आप दिन भर फोन पर है, और उससे कह रहे हैं, किताब पढो। तो उसका subconscious सिर्फ आपका action record कर रहा है कि सकून तो स्क्रीन में ही है।

06. बालक का व्यवहार brain की Chemistry से control होता है :- आज कल हर पेरेंन्ट की एक ही शिकायत है कि ये फोन छोड़ता ही नहीं। लेकिन आपने कभी सोचा है कि क्यों? उसका उत्तर एक सरल शब्द में हैं डोपामाइन । डोपामाइन हमारे दिमाग का reward chemical है, जब दिमाग को अच्छा लगता है तो वह कहता है इसे दोहराओ। real scroll की instant dopamine. गेम में लेवल ऊपर, high speed dopamine. उसका ब्रेन हाईस्पीड मनोरंजन का आदि हो गया है। Problem ये नहीं कि बच्चा बिगड़ गया है प्रॉबलम ये है कि उसकी डोपामाइन सप्लाई सिर्फ फोन से जुड़ी है, तो इसका सोल्यूशन हमें उनका डोपामाइन सोर्स बदलना होगा। जब वे मेहनत करें, तो प्रशंसा का dopamine दें। जब वो खेल कर आये तो फिजिकल एचीवमेंट का डोपामाइन दें। जब वो आपकी मदद करें तो कनेक्शन और हग का डोपामाइन दें। बच्चे का व्यवहार सिर्फ motivation से नहीं, उसके brain की chemistry से कन्ट्रोल होता है। जब उसकी दुनिया फोन से ज्यादा exciting हो तो वो फोन खुद ही छोड देगा ।

07. अपने बच्चे को नहीं पहले खुद को सुधारें -

- जिस बच्चें को मारा-पीटा जाता हैं, उसका टेलेंट खत्म हो जाता है। और वह डरपोक बन जाता है।
- जिस बच्चे को बार-बार ताना मारा जाता है वह कोशिश करना छोड देता है।
- जिस बच्चे का मजाक उडाया जाता है उसका आत्म विश्वास जबाब दे जाता है।
- जिस बच्चें पर भरोसा नहीं किया जाता वह आगे चलकर विद्रोही बन जाता है। वह अपने आपको पसन्द करना छोड़ देता है।
- अच्छे काम करने के बाद भी जिस बच्चे की तारीफ नहीं की जाती, वह अपने आप को पसन्द करना छोड़ देता है। खुद से नफरत करने लगता है।
- इसीलिए अभिभावक-शिक्षक बन्धु अपने बच्चे को सुधारने की जरूरत नहीं है, पहले खुद को सुधारिये।

कमल कुमार (संयोजक)
भारतीय शिक्षा परिषद
नेहरू नगर - गाजियाबद

बुद्ध पूर्णिमा

बुद्ध पूर्णिमा भारत और विश्व के कई देशों में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण पर्व है। यह दिन भगवान गौतम बुद्ध के जन्म, ज्ञान प्राप्ति (निर्वाण) और महापरिनिर्वाण—तीनों की स्मृति में मनाया जाता है। यह पर्व वैशाख मास की पूर्णिमा को आता है और शांति, करुणा तथा सत्य के संदेश को फैलाने का अवसर देता है।

भगवान बुद्ध का जन्म **लुंबिनी** (वर्तमान नेपाल) में हुआ था। उन्होंने मानव जीवन के दुखों को समझने के लिए राजमहल का सुख छोड़ दिया और कठोर तपस्या के बाद बोधगया में ज्ञान प्राप्त किया। उनके उपदेशों का मुख्य आधार "मध्यम मार्ग" है, जिसमें न तो अत्यधिक भोग-विलास है और न ही कठोर तपस्या। उन्होंने चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग के माध्यम से जीवन जीने की सही दिशा बताई।

बुद्ध पूर्णिमा के दिन लोग प्रातः स्नान कर मंदिरों में जाते हैं, दीप जलाते हैं और भगवान बुद्ध की प्रतिमा के सामने प्रार्थना करते हैं। इस दिन दान-पुण्य का विशेष महत्व होता है। कई लोग गरीबों को भोजन, वस्त्र और अन्य आवश्यक वस्तुएँ दान करते हैं। बौद्ध धर्म के अनुयायी इस दिन ध्यान और साधना करते हैं तथा बुद्ध के उपदेशों को याद करते हैं।

आज के समय में जब समाज में हिंसा, अशांति और तनाव बढ़ रहा है, तब बुद्ध के विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। उनका अहिंसा, प्रेम और सहिष्णुता का संदेश हमें एक बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा देता है।

अंततः बुद्ध पूर्णिमा केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है, बल्कि यह मानवता को सही मार्ग पर चलने का संदेश देने वाला दिन है। हमें इस दिन भगवान बुद्ध के आदर्शों को अपनाने और अपने जीवन में शांति, सादगी तथा करुणा लाने का संकल्प लेना चाहिए

मोनिका चौहान (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व श्रमिक दिवस

LABOUR DAY

-:श्रम ही सृजन का आधार है:-

विश्व श्रमिक दिवस प्रत्येक वर्ष **1 मई** को पूरे विश्व में मनाया जाता है। यह दिन उन सभी श्रमिकों को समर्पित है, जो अपने कठिन परिश्रम, समर्पण और लगन से समाज और देश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इस दिन का उद्देश्य श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा करना और उनके कार्य-परिस्थितियों को बेहतर बनाना है। विश्व श्रमिक दिवस का इतिहास श्रमिकों के संघर्ष और अधिकारों से जुड़ा हुआ है। जब श्रमिकों को लंबे समय तक अत्यधिक काम करना पड़ता था और उन्हें उचित वेतन व सुविधाएँ नहीं मिलती थीं, तब उन्होंने अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाई। उनके इसी संघर्ष के परिणामस्वरूप आज हमें 8 घंटे के कार्य दिवस जैसी सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं।

श्रमिक हमारे समाज की रीढ़ हैं। वे हर क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसान खेतों में अनाज उगाते हैं, मजदूर इमारतों और सड़कों का निर्माण करते हैं, और कारखानों में काम करने वाले कर्मचारी आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। इनके बिना हमारा जीवन असंभव हो जाता है। वास्तव में, श्रमिक ही राष्ट्र निर्माण के सच्चे निर्माता होते हैं। आज के आधुनिक युग में भी कई श्रमिकों को कठिन परिस्थितियों में काम करना पड़ता है। उन्हें उचित वेतन, स्वास्थ्य सुविधाएँ और सुरक्षित कार्यस्थल नहीं मिल पाते। इसलिए यह दिन हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि हम उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए क्या कर सकते हैं। हमें श्रमिकों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। हमें उनके कार्य को छोटा या बड़ा समझने के बजाय, हर कार्य को समान महत्व देना चाहिए। एक सशक्त और विकसित समाज वही होता है, जहाँ हर व्यक्ति को उसके श्रम का उचित मूल्य और सम्मान मिलता है।

अंत में, विश्व श्रमिक दिवस हमें यह संदेश देता है कि श्रम ही सफलता की कुंजी है। हमें न केवल श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए, बल्कि उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करके एक बेहतर और समानता से भरे समाज का निर्माण करना चाहिए।

शिवानी शुक्ला (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जयंती

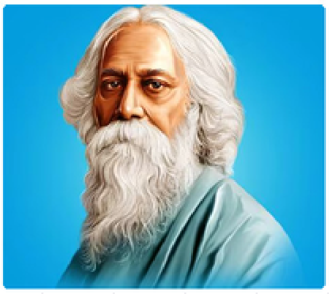

रविन्द्र नाथ टैगोर भारतीय साहित्य के महान कवि, लेखक, दार्शनिक, संगीतकार और शिक्षाविद थे। उनका जन्म **7 मई 1861** को कोलकाता में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। उनके पिता देबेन्द्र नाथ टैगोर एक प्रसिद्ध समाज सुधारक थे, जिससे टैगोर जी को बचपन से ही उच्च विचारों की प्रेरणा मिली। टैगोर जी ने बहुत छोटी उम्र से ही कविता और लेखन शुरू कर दिया था। उनकी प्रसिद्ध काव्य कृति गीतांजलि ने उन्हें विश्वभर में पहचान दिलाई, जिसके लिए उन्हें 1913 में नोबेल प्राइस इन लिटरेचर से सम्मानित किया गया। वे एशिया के पहले व्यक्ति थे जिन्हें यह सम्मान मिला।

उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया और शांतिनिकेतन की स्थापना की, जो बाद में विश्व-भारती विश्वविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध हुआ। उनका मानना था कि शिक्षा प्रकृति के बीच और स्वतंत्र वातावरण में होनी चाहिए।

टैगोर जी ने लगभग 2000 से अधिक गीतों की रचना की, जिन्हें रवीन्द्र संगीत कहा जाता है। उन्होंने इंडिया के राष्ट्रगान जन गण मन और बांग्लादेश के राष्ट्रगान आमार सोनार बांग्ला की भी रचना की, जो उनकी महानता को दर्शाता है।
वे केवल साहित्यकार ही नहीं, बल्कि एक महान देशभक्त भी थे। जालियावाला बाग हत्याकांड के विरोध में उन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई **“नाइटहुड”** की उपाधि लौटा दी थी।

रवीन्द्रनाथ टैगोर जी का निधन 7 अगस्त 1941 को हुआ, लेकिन उनके विचार, साहित्य और गीत आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं। उनका जीवन हमें सृजनशीलता, मानवता और स्वतंत्र सोच का संदेश देता है।

शिवानी शर्मा (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

महाराणा प्रताप जयंती

महाराणा प्रताप (9 मई 1540- 19 जनवरी 1597) मेवाड़ के सिसोदिया राजवंश के 13वे शासक थे जो अपनी वीरता, स्वाभिमान और **मुगल सम्राट अकबर** के खिलाफ़ अदम्य संघर्ष के लिए प्रसिद्ध है 1572 में राज्याभिषेक के बाद उन्होंने कभी मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की और घास की रोटी खाकर भी अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते रहे। 9 मई 1540(ज्येष्ठ शुक्ल तृतीय) कुंभलगढ़ दुर्ग,राजस्थान। महाराणा उदय सिंह द्वितीय और माता रानी जयवंता बाई। महाराणा प्रताप का बचपन भील समुदाय के साथ बीता,भीलो के साथ ही वे युद्ध कला सीखते थे। भील अपने पुत्र को कीका कहकर पुकारते है,इसलिए भील महाराणा को' कीका' नाम से पुकारते थे।

महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक **1 मार्च 1572** को 32 वर्ष की आयु में गोगुंदा में हुआ था। महाराणा उदय सिंह के निधन के बाद मेवाड़ के सरदारों ने ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते प्रताप को चुना। महाराणा प्रताप के राज्य (मेवाड़)की प्रमुख राजधानी चावंड थी। उन्होंने 1585 इस्वी में राठौरो को हराकर इस क्षेत्र पर अधिकार किया और अपनी नई राजधानी स्थापित की, जो लगभग 28 वर्ष तक मेवाड़ की राजधानी बनी रही। चावंड के अलावा उन्होंने गोगुंदा और कुंभलगढ़ का भी उपयोग किया था।

18 जून 1576 अकबर की विशाल सेना के खिलाफ़ ऐतिहासिक युद्ध,जिसमें प्रताप ने अपनी वीरता का अद्भुत परिचय दिया। इस युद्ध में महाराणा प्रताप ने मुगल सत्ता को घुटनों पर ला दिया,जिसे कर्नल जेम्स टॉड ने 'मेवाड़ का मैराथन' कहा है। वे लगभग 72 किलो का भाला और 81 किलो की छाती कवच धारण करते थे।महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास के महानतम योद्धाओं में से एक है। महाराणा प्रताप जी ने शपथ ली थी कि जब तक मेवाड़ स्वतंत्र नहीं होगा तब तक वे सोने चांदी के बर्तनों में नहीं खाएंगे और पलंग पर नहीं सोएंगे। महाराणा प्रताप जी की मृत्यु 19 जनवरी 1597 को 56 वर्ष की आयु में चावंड उदयपुर राजस्थान में हुई थी। उनकी मृत्यु का कारण एक शिकार दुर्घटना में लगी चोट थी,जब धनुष की कमान खींचते समय उनके पेट में गहरी चोट लग गयी थी।अपने अंतिम समय में वे निरंतर युद्ध के कारण दुर्बल हो चुके थे और शिकार के दौरान लगी इस चोट से उबर नहीं पाए।उनके निधन के बाद उनके पुत्र अमरसिंह प्रथम मेवाड़ के अगले शासक बने।

रजनी बिष्ट (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

राष्ट्रीय प्रोद्यौगिकी दिवस

"तकनीक से बढ़े देश की शान, यही है भारत की पहचान।"

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस हर साल **11 मई** को मनाया जाता है। यह दिन भारत के लिए बहुत गर्व का दिन है, क्योंकि इसी दिन वर्ष 1998 में पोखरण परमाणु परीक्षण सफलतापूर्वक किए गए थे। इन परीक्षणों ने दुनिया को दिखाया कि भारत विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में मजबूत और सक्षम देश है। इस दिन का मुख्य उद्देश्य विज्ञान और तकनीक के महत्व को समझाना और लोगों को नई-नई खोजों के लिए प्रेरित करना है। हमारे जीवन में तकनीक का बहुत बड़ा योगदान है। आज हम मोबाइल, कंप्यूटर, इंटरनेट, ऑनलाइन पढ़ाई और डिजिटल पेमेंट जैसी सुविधाओं का उपयोग करते हैं। ये सभी तकनीक की देन हैं।

भारत के महान वैज्ञानिक डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने देश को तकनीक के क्षेत्र में आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने युवाओं को हमेशा बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने के लिए मेहनत करने की प्रेरणा दी।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर स्कूलों, कॉलेजों और संस्थानों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जैसे-भाषण, विज्ञान प्रदर्शनी, निबंध लेखन आदि। इससे बच्चों और युवाओं में विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ती है।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस हमें यह सिखाता है कि तकनीक हमारे जीवन को आसान बनाती है और देश की प्रगति में मदद करती है। हमें भी नई तकनीक सीखनी चाहिए और देश के विकास में अपना योगदान है।

"विज्ञान की शक्ति, देश की उन्नति।"

रुषा गुप्ता (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

वीर सावरकर जयंती

विनायक का जन्म 28 मई, 1883 को महाराष्ट्र के नासिक जिले के भागुर गाँव में हुआ था। उनके पिता **दामोदर पंत सावरकर** और माता **राधाबाई** थीं। बचपन से ही वे कुशाग्र बुद्धि के थे और सावरकर के मन में देश की स्वाधीनता के प्रति अटूट निष्ठा थी। मात्र 12 वर्ष की आयु में उन्होंने विदेशी शासन के विरुद्ध अपनी पहली कविता लिखी थी।

भारत माता के अनन्य उपासक, क्रांतिकारी, महान कवि और समाज सुधारक स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर की जयंती पर संपूर्ण राष्ट्र उनके त्याग और तपस्या को नमन करता है। सावरकर एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने न केवल अंग्रेजों की सत्ता को हिलाया, बल्कि भारतीय जनमानस में 'स्वत्व' और 'हिंदुत्व' की चेतना को भी जागृत किया। 28 मई, 1883 को महाराष्ट्र के भागुर में जन्मे सावरकर के भीतर बचपन से ही देशभक्ति की ज्वाला धधक रही थी। उन्होंने 'अभिनव भारत' और 'फ्री इंडिया सोसाइटी' जैसे संगठनों के माध्यम से युवाओं को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा। उनकी कलम तलवार से भी अधिक धारदार थी। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक "1857 का स्वातंत्र्य समर" ने इस धारणा को ध्वस्त कर दिया कि 1857 की घटना महज एक 'सिपाही विद्रोह' था। उन्होंने सिद्ध किया कि वह भारत का 'प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' था। सावरकर के साहस की पराकाष्ठा 'काला पानी' की सजा के दौरान दिखी। पोर्ट ब्लेयर की सेल्युलर जेल में उन्हें जो यातनाएं दी गईं, वे किसी भी साधारण मनुष्य का मनोबल तोड़ सकती थीं। कोल्हू के बैल की तरह जुतना, भूखा रहना और काल कोठरी में अकेले रहना—इन सब के बावजूद उनका राष्ट्रवाद अडिग रहा। उन्होंने जेल की दीवारों पर कीलों और कोयले से कविताएँ लिखीं, जो आज भी वहां के कण-कण में गुंजायमान हैं। सावरकर केवल एक राजनीतिक क्रांतिकारी नहीं थे, वे एक दूरदर्शी समाज सुधारक भी थे। उन्होंने छुआछूत और जातिवाद जैसी कुरीतियों के विरुद्ध अभियान चलाया। रत्नागिरी में उनके द्वारा स्थापित 'पतित पावन मंदिर' इस बात का प्रमाण है कि वे हिंदू समाज के सभी वर्गों को एक सूत्र में पिरोना चाहते थे। वीर सावरकर का जीवन हमें सिखाता है कि राष्ट्र सर्वोपरि है। "हिंदू, हिंदू पद पादशाही" के उनके विचार और "अखंड भारत" का सपना आज भी करोड़ों भारतीयों को प्रेरित करता है। वे विज्ञानवादी थे और चाहते थे कि भारत आधुनिक, सशक्त और सुरक्षा की दृष्टि से आत्मनिर्भर बने।

सावरकर जी के शब्दों में— "मातृभूमि! तेरे चरणों में पहले ही मेरा मन अर्पित कर चुका हूँ। देश सेवा ही ईश्वर सेवा है।"

शिवनंदन शर्मा (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

पुण्यश्लोका अहिल्याबाई जयंती

अहिल्याबाई होल्कर भारतीय इतिहास की एक ऐसी महान शासिका थीं, जिनका नाम आज भी सम्मान और श्रद्धा से लिया जाता है। उनकी जयंती हर वर्ष बड़े उत्साह के साथ मनाई जाती है, जिसे पुण्यश्लोक अहिल्याबाई जयंती के रूप में जाना जाता है। यह दिन उनके महान कार्यों, आदर्श शासन और समाज सेवा को याद करने का अवसर प्रदान करता है। अहिल्याबाई होल्कर का जन्म **31 मई 1725** को महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव चौंडी में हुआ था। साधारण परिवार में जन्म लेने के बावजूद उन्होंने अपने साहस, बुद्धिमत्ता और न्यायप्रियता से एक आदर्श शासक के रूप में पहचान बनाई। वे मल्हारराव होल्कर की पुत्रवधू थीं, जिन्होंने उनके गुणों को पहचानकर उन्हें शासन की जिम्मेदारी सौंपी।

पति और ससुर के निधन के बाद अहिल्याबाई ने **1767** में मालवा राज्य की बागडोर संभाली। उनके शासनकाल में प्रजा को न्याय, सुरक्षा और समृद्धि मिली। उन्होंने न केवल प्रशासन को मजबूत किया बल्कि समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए भी अनेक कार्य किए। उनका शासन “रामराज्य” की तरह आदर्श माना जाता है। अहिल्याबाई होल्कर धार्मिक और परोपकारी प्रवृत्ति की थीं। उन्होंने पूरे भारत में कई मंदिरों, घाटों और धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। वाराणसी का काशी विश्वनाथ मंदिर, उज्जैन, सोमनाथ और अन्य तीर्थस्थलों के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनके कार्यों ने भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत को समृद्ध किया। पुण्यश्लोक अहिल्याबाई जयंती के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। स्कूलों, कॉलेजों और सामाजिक संस्थाओं में उनके जीवन पर भाषण, निबंध और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। लोग उनके आदर्शों को अपनाने और समाज सेवा के प्रति प्रेरित होते हैं।

अंततः, अहिल्याबाई होल्कर केवल एक शासिका ही नहीं, बल्कि न्याय, करुणा और सेवा की प्रतीक थीं। उनकी जयंती हमें उनके आदर्शों पर चलने और समाज के लिए कुछ करने की प्रेरणा देती है।

विधि शर्मा (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

हनुमान जन्मोत्सव

दिनांक-2/4/26 को सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा में हनुमान जन्मोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने भगवान हनुमान की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्चन कर भैया-बहिनों को हनुमान जी की वीरता के बारे में बताया।

हनुमान जन्मोत्सव हमें वीरता, भक्ति और सेवा की प्रेरणा देता है। भगवान हनुमान जी अपने अद्भुत बल, अटूट साहस और प्रभु श्रीराम के प्रति सच्ची निष्ठा के लिए जाने जाते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि सच्ची शक्ति केवल शरीर की नहीं, बल्कि मन और आत्मा की भी होती है।

प्रिय भैया-बहिनों, हमें हनुमान जी से सीखना चाहिए कि कठिनाइयों से कभी डरना नहीं चाहिए। हमें अपने गुरुजनों का सम्मान करना, सत्य के मार्ग पर चलना और हमेशा दूसरों की सहायता करना चाहिए।

जय हनुमान!

अभिभावक गोष्ठी

दिनांक 11/04/2026 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में आचार्य-अभिभावक गोष्ठी का सफल आयोजन किया गया।

गोष्ठी में भैया-बहिनों के शैक्षिक, संस्कारात्मक एवं सर्वांगीण विकास पर विस्तार से चर्चा की गई।

आचार्यों एवं अभिभावकों ने मिलकर बच्चों के उज्ज्वल भविष्य हेतु सकारात्मक सुझाव साझा किए।

परशुराम जयंती

दिनांक - 18.04.2026 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में वंदना सत्र में प्रधानाचार्य जी श्रीमान देवेंद्र कुमार शर्मा जी व आचार्या बहिन किरण जी द्वारा दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन कर भगवान परशुराम जी की जयंती श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर भैया-बहिनों को उनके त्याग, पराक्रम एवं धर्म के प्रति समर्पण से प्रेरित करने वाली ज्ञानवर्धक वीडियो भी दिखाई गई, जिससे विद्यार्थियों ने उनके आदर्श जीवन मूल्यों को समझा और उन्हें अपने जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। यह आयोजन न केवल सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाने वाला रहा, बल्कि विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में भी अत्यंत प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।

विश्व पृथ्वी दिवस

दिनांक 22-04-2026 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में विश्व पृथ्वी दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर भैया-बहिनों को पृथ्वी संरक्षण से संबंधित प्रेरणादायक वीडियो दिखाई गई, जिससे उन्हें स्वच्छता, वृक्षारोपण एवं जल संरक्षण के महत्व की जानकारी मिली।

प्रधानाचार्य जी ने संदेश दिया —

"पृथ्वी हमारी जीवनदाता है, इसका संरक्षण करना हम सभी का कर्तव्य है।"

विश्व पुस्तक दिवस

दिनांक 23-04-2026 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में विश्व पुस्तक दिवस उत्साह एवं प्रेरणा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर भैया-बहिनों को पुस्तकों के महत्व एवं अध्ययन की उपयोगिता से संबंधित प्रेरणादायक जानकारी दी गई। विद्यार्थियों को अच्छी पुस्तकों के अध्ययन की आदत विकसित करने हेतु प्रेरित किया गया।

प्रधानाचार्य जी ने संदेश दिया —

"पुस्तकें हमारे जीवन की सच्ची मित्र होती हैं। अच्छी पुस्तकों का अध्ययन हमें ज्ञान, संस्कार एवं सही दिशा प्रदान करता है। हमें प्रतिदिन अध्ययन की आदत विकसित करनी चाहिए।" 📚✨

स्वर्ण प्राशन

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में दिनांक 24/4/26 को शिशु वाटिका के भैया-बहिनों हेतु पुष्य नक्षत्र के पावन अवसर पर स्वर्ण प्राशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान बच्चों को आयुर्वेदिक स्वर्ण प्राशन औषधि पिलाई गई, जो उनके स्वास्थ्य, स्मरण शक्ति एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में सहायक है। कार्यक्रम श्रद्धा और उत्साह के साथ संपन्न हुआ तथा शिक्षकों ने इसके महत्व से अवगत कराया।

जन्मोत्सव हवन पूजन कार्यक्रम

दिनांक- 27/02/26 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा परिसर में जनवरी माह में जन्मे समस्त भैया-बहिनों के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में एक पावन हवन-पूजन कार्यक्रम का आयोजन अत्यंत श्रद्धा एवं उल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य तथा सद्गुणों के विकास के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना रहा। हवन-पूजन में आचार्या बहिन के मार्गदर्शन में विधिवत मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञ संपन्न कराया गया। सभी भैया-बहिनों ने श्रद्धापूर्वक आहुति अर्पित की तथा अपने जीवन में सत्य, संस्कार, अनुशासन और सेवा भाव को अपनाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी एवं आए अभिभावक बंधुओं द्वारा भैया-बहिनों को शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद प्रदान किया गया।

बताओ तो जानें

How much do you know about the...

Environment

1 What do you call the area that is inhabited by a particular species?

a) Habitat.
b) Environment.
c) Biosphere.

2 What do you call the processing of used materials and their reuse?

a) Recycling.
b) Reusing.
c) Reprocessing.

3 Which layer protects the Earth from UV rays?

a) Oxygen.
b) Nitrogen.
c) Ozone.

4 The process by which the Earth's temperature is increasing is called the ...

a) biothermal effect.
b) greenhouse effect.
c) temperature effect.

5 Which of the following is biodegradable?

a) Plastic.
b) Paper.
c) Glass.

6 What is the term for the complete disappearance of a species?

a) Termination.
b) Disappearance.
c) Extinction.

7 What do you call renewable safe sources of energy?

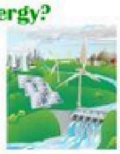

a) Alternative energies.
b) Bio-energies.
c) Solar energies.

8 Which of these energy sources is renewable?

a) Coal.
b) Natural gas.
c) Wind.

9 What do you call the rain that contains many chemicals and is harmful?

a) Smog.
b) Acid rain.
c) Monsoon.

10 What do you call a substance that pollutes the air, water or soil?

a) Pollutant.
b) Pesticides.
c) Acid.

11 What is the most used renewable energy source in the world?

a) Hydro energy.
b) Solar energy.
c) Wind energy.

12 Which of these animals is not in danger becoming extinct?

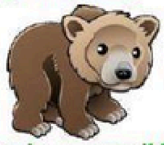

a) Panda bears.
b) Polar bears.
c) Grizzly bears.

13 What type of shopping bag is more eco-friendly?

a) Paper.
b) Plastic.
c) Neither.

14 Global warming will cause an increase of ...

a) Heat waves.
b) Hurricanes.
c) Both.

15 Which gas is responsible for global warming?

a) Carbon dioxide.
b) Oxygen.
c) Hydrogen.

16 What are some of the consequences of deforestation?

a) Loss of habitats.
b) Soil erosion.
c) Both.

17 Which of the following is not a fossil fuel?

a) Coal.
b) Wood.
c) Oil.

18 Which of these human activities contributes the most for global warming?

a) Using fossil fuels.
b) Cutting down trees.
c) Riding bicycles.

19 Which of the following can be recycled?

a) Milk cartons.
b) Plastic bottles.
c) Both.

20 Which is the following animals is not yet extinct?

a) Tasmanian tiger.
b) Dodo.
c) Javan rhinoceros.

21 Rainforest land is most often cleared for ...

a) factories.
b) farmland.
c) pasture.

पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

1.रवीन्द्रनाथ जी ने कौन सी उपाधि ब्रिटिश सरकार को लौटाई?

2. महाराणा प्रताप किस मुगल राजा के खिलाफ थे?

3. रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म कब हुआ?

4. भगवान बुद्ध का जन्म कहाँ हुआ था?

5. विश्व श्रमिक दिवस किस तिथि को मनाया जाता है?

6. महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक कब हुआ था?

7. वीर सावरकर जी के माता - पिता का नाम क्या था?

8. अहिल्याबाई होल्कर का जन्म कब हुआ था?

9. अहिल्याबाई होल्कर ने मालवा राज्य की बागडोर कब संभाली?

10. राष्ट्रीय प्रोद्योगिकी दिवस कब मनाया जाता है?

1. आलोक- उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक के लेखों में विद्यमान है अतः इसी अंक के उत्तर मान्य होंगे ।
2. कक्षा- द्वितीय से पञ्चम तक के सभी भैया/बहिनों को ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 25 व 26 में दिए प्रश्नों के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 25 मई 2026 तक भेजने होंगे।